पंजीयन कमांक – 612

शांति मैत्री ग्रामीण विकास संस्थान
SHANTI MAITRI GRAMIN VIKAS SANTHAN
(छ.ग.राज्य शासन से मान्यता प्राप्त)
Email ID – shanti.maitri.gvs@gmail.com
Web. – www.shantimaitri.in

कार्या – द्वारा मनोज कुमार साहू ग्राम दरबा
वि.ख.– कुरूद, जिला– धमतरी (छ.ग.)
OFF – C/O MANOJ KUMAR SAHU
VILLAGE POST DARBA, BLOCK. –
KURUD DISTT. – DHAMTARI (C.G.)
Mob. 09009203565,08319353001

वार्षिक प्रतिवेदन 2025–26

➢ राष्ट्रीय न्यास विकलांगजन सशक्तिकरण विभाग की योजना

राष्ट्रीय न्यास विकलांगजन सशक्तिकरण विभाग सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के दिग्दर्शिका के अनुरूप मानसिक विमंदता, आर्टिज्म व सेरेब्रल पाल्सी और एकाधिक बहुविकलांगता से ग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहे दिव्यांग बच्चों के लिए समर्थ–सह–घरौंदा योजना संचालित किया जा रहा है। जिसमें– कुल 29 दिव्यांजनों को लाभांवित किया जा रहा है।

1. समर्थ सह घरौंदा योजना –

राष्ट्रीय न्यास के सहयोग से समर्थ–सह–घरौंदा योजना का संचालन संस्थान द्वारा किया जा रहा है। दिव्यांग विकास केन्द्र सिर्री पुराना आई0टी0आई0 भवन सिर्री में दर्ज मानसिक विमंदता, सेलेबल पॉल्सी, आर्टिज्म एवं बहुविकलागंता से ग्रसित व्यक्तियों के साथ कार्य किया जा रहा है।

For, SHANTI MAITRI GRAMIN VIKAS SANSTHAN

व्यक्तित्व विशेषताएँ संबंधी गतिविधियों का पुर्नअभ्यास –

1. शारीरिक हीनता को दूर करने सतत् अभ्यास – मानसिक मंदता बच्चों एवं व्यवस्कों का शरीर विकृत हो जाता है। शारीरिक रोगों का सामना करने की क्षमता कम होती है। मंदबुद्धि बच्चें एवं व्यवस्क प्रायः शारीरिक रूप से बेडौल होते है जैसे– नाक, कान, हाथ, पैर, व पेट का विकृत होना। सामान्य बच्चों की तुलना में शारीरिक विकास कम होता है लेकिन यह आवश्यक नही कि जो बच्चा शारीरिक रूप से विकृत होगा वह बुद्धिहीन होगा। इनके शारीरिक स्थिति में जो विकृति है उसे दूर करने के लिए फिजियोथैरिपिस्ट के माध्यम से सतत् अभ्यास द्वारा शारीरिक एवं मानसिक रूप से परिपक्व बनाने का नित्य प्रति पुर्नअभ्यास कराया जा गया।

2. सामाजस्यता– मानसिक मंदता बच्चें स्वयं को असहाय व हीन भावना ग्रसित महसूस करते है। इन बच्चों को अपने परिवार तथा वातावरण सम्बंधी विभिन्न समस्याओं का समाना करना पड़ता है। मानसिक मंदता वाले बच्चों में परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को समायोजित करने की क्षमता में कमी होती है। विभिन्न प्रकार के एक्टिविटी द्वारा इनके समायोजन संबंधी समस्याओं का दूर करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया।

For, SHANTI MAITRI GRAMIN VIKAS SANSTHAN

जिसमें मूल रूप से परिवार विद्यालय एवं समाज (Adjstment of Family, School and Society) को शामिल किया गया है।
समायोजन विकास के लिए चरणबद्ध तरीके से दिव्यांगजनों को पुर्नअभ्यास सिखाया गया क्योंकि मानसिक मंदता वाले दिव्यांगजनों में अभिप्रेरणा व प्रोत्साहन की कमी होती हैं इनका झुकाव अनैतिकता और अपराध की ओर रहता है। इनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। ये दिव्यांगजन स्वयं कार्य नही कर सकते लेकिन दूसरे के निर्देशन में ये कार्य करा लिया गया।

3. सृजनात्मक को बढ़ावा देना – मानसिक मंदता बच्चों में सृजनात्मकता की कमी होती है सीमित अवधान होने के कारण इन बच्चों एवं व्यवस्कों की रूचि, अभिरूचि तथा अभिवृति आदि क्षेत्रों में भी कमी होती है।वैयक्तिक विभिन्नता सीमित होती है। मानसिक मंदता बच्चों में किसी एक ही कार्य में अपनी रूचि का प्रदर्शन करने में सक्षम होते है। सृजनात्मक से अभिप्राय किसी नई वस्तु के सृजन से होता है इन सभी प्रकार के सृजनात्मक कमी को दूर करने के लिए विभिन्न अवसरों पर दिव्यांगजनों को नई नई सृजनात्मक गतिविधियों से जोड़ा गया। इसके लिए संस्था में केयरगिवर एवं परामर्शदाता के द्वारा उचित व्यवहार दिव्यांगजनों को पुर्नरावित्ति कर सिखलाया गया।

बौद्धिक रूप से दिव्यांगजनों के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से सिखाया गया–

<u>दिव्यांग युवा वयस्क के लिए विकास और प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण क्षेत्र –</u>

1. काम से सम्बंधित कौशल और अवधारणाएँ
2. संवाद और भाषा
3. सामाजिक, भावनात्मक और अंर्तवैयक्तिक कौशल
4. दिशा ज्ञान और गतिशीलता
5. बुनियादी गणित, समय और धन प्रबंधन
6. अपनी देखभाल, स्वास्थ्य और स्वच्छता
7. स्वतंत्र जीवन यापन
8. मनोरंजन या आराम के कौशल

दिव्यांगजनों को व्यवहारिक व व्यवसायिक मार्गदर्शिका बोध एवं सतत् ज्ञान का प्रशिक्षण के माध्यम से सिखाया गया।

For, SHANTIMAITRI GRAMIN VIKAS SANSTHAN

4. बौद्धिक प्रतिशोध के लिए निष्कर्ष – समर्थ सह घरौंदा केन्द्र में निवासरत

बच्चों एवं वयस्कों के शैक्षिक आवश्यकताओं एवं बौद्धिक रूप से दिव्यांगजनों को हर जगह दूसरे वर्ग या तीसरे वर्ग के नागरिक के रूप में माना जाता है। अतीत में समाज ने हमेशा उनके साथ सबसे अमानवीय तरीके से व्यवहार किया जाता रहा है।लेकिन अब समाज में भी जागरूकता का बोध होते जा रहा है।

5. बौद्धिक रूप से मंद व्यक्तियों को हमेशा उपहास और नाराज किया गया है। हॉलाकि, अब स्थिति कुछ हद तक बदल गई है। सामाजिक दृष्टिकोण ने एक अलग मोड़ ले लिया है। उन्हें अब सहानुभूति और समझ के साथ पेश किया गया ।

6. पारिवारिक क्षेत्र में माता–पिता की भागीदारी का औचित्य हाल ही में विकसित हुआ है। परिवार में एक बौद्धिक मंद बच्चा एक आजीवन समस्या प्रस्तुत करता है। परिवार को बच्चें को स्वीकार करना होगा क्योंकि वह अपराध, दुःख और पीड़ा की भावनाओं को महसूस कर रहा है। शर्म और अस्वीकृति की भावना आगे मंद बच्चे के मामले बढ़ा सकती है। कई मानसिक रूप से कमजोर बच्चों का उचित ध्यान, प्यार और देखभाल को देखते हुए जबरदस्त सुधार दिखाई दिया।

For, SHANTIMAITRI GRAMIN VIKAS SANSTHAN